ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

श्रीमती पी.व्ही.संजना
(शोधार्थी)

डॉ. (श्रीमती) स्वाति पाण्डेय
प्राध्यापक (शिक्षा संकाय)
भारती विश्वविद्यालय, पुलगांव, दुर्ग (छ.ग.)

सारांश –

विश्व के सभी मनुष्य शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक, संवेगात्मक आदि दृष्टियों से हमेशा समान नहीं होते, उनकी असमानता का मुख्य कारण वातावरण एवं समायोजन है यह वातावरण एवं समायोजन का ज्ञान पहले परिवार तत्पश्चात् विद्यालय से प्राप्त होता है विद्यार्थी वातावरण से संबंध तभी हो पता है जब वह अपने चारों ओर की स्थिति के अनुसार समायोजित हो सके विद्यार्थी अपने परिवार एवं विद्यालय का वातावरण सौहार्द्र पूर्ण सुरक्षा एवं आत्म–संतुष्टि करने से लिप्त हो तो समायोजन, धनात्मक रूप से स्तर को बढ़ावा प्राप्त होने में मदद होती है। प्रस्तुत शोध पत्र दुर्ग जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्यनरत छात्र एवं छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है। न्यादर्श के रूप में दुर्ग जिले को सम्मिलित किया गया है शोध अध्ययन हेतु 200 विद्यार्थियों का चयन शोध के अध्ययन के उद्देश्य की पूर्ति हेतु न्यादर्श के रूप में किया गया है।

मुख्य शब्दावली *– समायोजन, उच्च प्राथमिक विद्यालय, विद्यार्थी, सौहार्दपूर्ण, आत्म संतुष्टि, संवेगात्मक*

प्रस्तावना –

अपने चारों ओर के वातावरण से समायोजन को, विज्ञान के शब्दों में अनुकूलन कहते हैं। बालक अपने परिवार एवं शाला में अंतर क्रिया करके, समाज के प्रति संलग्न होकर, परिवार एवं समाज के सामने अनेक प्रतिक्रियाएं प्रदर्शित करता है उपयुक्त व्यवहार एवं प्रतिक्रियाओं का परिवार एवं समाज के प्रति अपने व्यवहार प्रस्तुतीकरण को ही समायोजन कहा जा सकता है। समायोजन क्षमता एक जटिल मनोवैज्ञानिक प्रत्यय है जिसका विकास पूरी

जिंदगी धीरे–धीरे निरंतर चलता रहता है। पारिवारिक समायोजन बालक को उनके जीवन में वर्तमान परिस्थितियों से उत्पन्न अनेक चुनौतियां एवं कठिन परिस्थितियों के साथ अच्छी तरह से संतुलन स्थापित करने की सक्षमता एवं कुशलता सफल जीवन जीने हेतु प्रेरित करता है। परिवार के बाद विद्यालय ही एक ऐसा कारक है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से बालक को शारीरिक, मानसिक एवं नैतिक विकास में महत्वपूर्ण रूप से भूमिका का निर्वहन करता है।

समायोजन –

समायोजन की अवधारणा सबसे पहले डार्विन ने दी जिसको डार्विन ने समायोजन को भौतिक संसार में जीवित रहने हेतु अनुकूलन के रूप में उपयोग किया। समायोजन को व्यक्ति की एक ऐसी स्थिति से मापा जाता है जो व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, व्यवसायिक, आर्थिक अन्य वातावरणों में परिवर्तनों के साथ अनुकूलन होने की सक्षमता को दर्शाता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन निर्वहन की प्रक्रिया में नित्य नई–नई आवश्यकताओं को अनुभव करता है एवं उन्हें पूरा करने का प्रयास करता है। यदि आवश्यकता की पूर्ति हो जाती है तो सामाजिक व्यक्तित्व का विकास होता है। वैश्वीकरण के इस युग में विद्यार्थियों को अनेक प्रकार के पारिवारिक एवं सामाजिक संघर्षों में समाहित होकर आगे बढ़ना होता है, परिणाम स्वरूप परिवार, समाज एवं विद्यालय में समायोजित होने पर उन्हें मानसिक तनाव का सामना भी करना पड़ता है जिसके कारण विद्यार्थियों में निराशा सामाजिक अलगाव, अवसाद एवं विद्यालय असफलता प्राप्त होने की संभावना बढ़ जाती है तथा कुसमायोजन की स्थिति उत्पन्न होने लगती है इस विषम परिस्थितियों के समाधान हेतु समायोजन स्तर को चिन्हित करके बच्चों के लिए ऐसा वातावरण को निर्मित किया जाना चाहिए जो उनके सार्वभौमिक विकास हेतु उचित हो।

संबंधित शोध अध्ययन –

शर्मा (2001) ने संवेगात्मक परिपक्वता, समायोजन, पारिवारिक वातावरण तथा मानसिक स्वास्थ्य का किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करने पर निष्कर्ष में पाया कि उच्च समायोजित शहरी छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि, निम्न समायोजित शहरी छात्रों

की तुलना में अधिक पाई गई परंतु समायोजन के संदर्भ में ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में समानता पाई गई। उच्च तथा निम्न समायोजित शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि छात्रों की तुलना में बेहतर पाई गई।

सिंह(2016) के शोध में उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की आत्म–सिद्धि एवं समायोजन का विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि छात्र एवं छात्राओं के समायोजन प्राप्तांको के बीच सार्थक अंतर पाया गया क्योंकि छात्रों के संवेग अस्थिर तथा आक्रामक होने के साथ विभिन्न परिस्थितियों में समायोजन करने की क्षमता रखते हैं। शोध अनुसार ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों का समायोजन शहरी छात्रों की तुलना में कम पाया गया ।कारण देखने पर पाया गया कि छात्रों का संवेगात्मक एवं कुल समायोजन अपेक्षाकृत अधिक है। आज का समाज परिवर्तनशील है अभिभावक के अपने बच्चों में कोई भी भेदभाव नहीं करते एवं विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों में समायोजित होकर परिवार की देखरेख करते हैं।

गोयल (2019) के सरकारी विद्यालय एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्रों के समायोजन का अध्ययन के अनुसार सरकारी विद्यालयों के छात्रों एवं गैर सरकारी विद्यालयों के छात्रों का समग्र समायोजन का स्तर सामान पाया गया, इसके अतिरिक्त सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालय की छात्राओं का समग्र समायोजन का स्तर समान है। शोध अनुसार सरकारी एवं गैर सरकारी छात्रों का समग्र समायोजन समान है एवं सरकारी विद्यालय की छात्राओं का समग्र समायोजन का स्तर गैर सरकारी विद्यालय के छात्रों की अपेक्षा उच्च पाया गया।

झा (2019) के ग्रामीण और शहरी छात्रों के समायोजन स्तर एवं व्यक्तित्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन के अनुसार ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के पारिवारिक समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है, ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के सामाजिक समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है, ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के स्वास्थ्य समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है एवं शहरी छात्रों के विद्यालयी समायोजन स्तर, ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों से अधिक है।

सिंह (2020) ने उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि ,समायोजन क्षमता सामाजिक–आर्थिक स्तर के परिपेक्ष में शैक्षिक संप्राप्ति का अध्ययन के अनुसार पाया कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पर अध्यनरत विद्यार्थियों के उच्च समायोजित विद्यार्थियों की शैक्षिक संप्राप्ति निम्न समायोजित विद्यार्थियों की तुलना में उच्च है। प्रस्तुत शोध में 500 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है जिसमें यादृच्छिक विधि का उपयोग किया एवं समायोजन के विश्लेषण हेतु डॉ. ए.के. पी. सिंह एवं डॉ आर. पी. सिंह द्वारा निर्मित की गई मापनी का उपयोग किया गया।

सिंह (2020) ने उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता एवं समायोजन का शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का अध्ययन में पाया गया कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है एवं परिकल्पना शोध अध्ययन में स्वीकृत पाई गई। शोध में 120 विद्यार्थियों को यादृच्छिक विधि द्वारा न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया। शोधार्थी ने श्रीमती रागिनी दुबे द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरणों का उपयोग किया।

शोध के उद्देश्य –

प्रत्येक कार्य करने का उद्देश्य आवश्यक होता है उद्देश्य के बिना किसी भी कार्य के लक्ष्य तक पहुंचना उचित एवं आसान नहीं है। प्रस्तुत शोध पत्र में निम्नलिखित उद्देश्य हैं –

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना –

परिकल्पना शोध समस्या एवं समस्या के समाधान के मध्य की कड़ी है परिकल्पना का अर्थ किसी समस्या के हल के विषय में पूर्वानुमान लगाना माना गया है, परिकल्पना एक समस्या समाधान का पूर्व विचार माना गया है जो किसी समस्या के समाधान संबंध में माना

जाता है जिसकी सार्थकता परीक्षण हेतु आवश्यक एवं महत्वपूर्ण तथ्वों को एकत्रित किया जाता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु परिकल्पनाओं के रूप निम्नवत् हैं––

H_{01}. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

शोध विधि –

शोध अध्ययन कार्य की संपूर्णता हेतु कई प्रकार की शोध विधियों का उपयोग किया जाता है। शोध कार्य में प्रयोगात्मक, ऐतिहासिक, वर्णनात्मक मुख्य शोध विधियां हैं। शोध विधियों की अत्यंत महत्वपूर्ण उपयोगिता एवं विशेषताएं हैं। शैक्षिक अनुसंधान की दृष्टि से प्रस्तुत शोध अध्ययन में मुख्य रूप से सर्वेक्षणात्मक (वर्णनात्मक) विधि का उपयोग किया गया है प्राथमिक स्रोतों से प्रदतों के संकलन और पूर्व संचालित संकलित प्रदतों के सत्यापन के लिए शोध अध्ययन क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों को सर्वेक्षण हेतु चयनित किया गया है जिसमें उपकरणों से प्राप्त प्रदतों को सारणीयन के पश्चात आवश्यकता अनुसार माध्य, मध्यमान विचलन एवं टी – परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का प्रयोग शोध कार्य में किया गया है।

जनसंख्या का चयन –

जनसंख्या, समय अवधि को ध्यान में रखते हुए, अध्ययन की जनसंख्या की दृष्टि से एवं अन्य कारणो को ध्यान में रखते हुए दुर्ग जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र को जनसंख्या तक सीमित रखकर शोध अध्ययन किया है।

न्यादर्श –

सर्वेक्षण के अंतर्गत दुर्ग जिले के 200 विद्यार्थियों को सामान्य यादृच्छिक विधि द्वारा शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय से न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है।

शोध उपकरण –

शोध अध्ययन के आंकड़ों का संकलन हेतु कुछ साधनों की आवश्यकता होती है जिसके द्वारा शोधार्थी शोध अध्ययन कार्य के उद्देश्य की पूर्ति करता है इन साधनों को ही उपकरण कहते हैं। शोध कार्य के लिए समायोजन हेतु ए.के.सिंह व ए.सेनगुप्ता द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण का उपयोग किया गया है।

शोध अध्ययन की आवश्यकता –

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन में दुर्ग जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के पूर्व माध्यमिक शाला अर्थात उच्च प्राथमिक विद्यालय पर अध्यनरत विद्यार्थियों के समायोजन का आकलन किया जा सकेगा एवं कुछ सुझाव शोध कार्य के पश्चात दिए जा सकेंगे जिसका प्रयोग राज्य सरकार के उच्च प्राथमिक स्तर पर चल रही अनेक योजनाओं के क्रियान्वहन को ओर से अधिक प्रभावी रूप से विकसित करने हेतु समर्थ हो सके विद्यार्थियों को और अधिक लाभ प्राप्त हो सके आधुनिकता के समय सीमा में शिक्षा प्रणाली के शिक्षण अधिगम परिणाम की प्रभावशीलता एवं दक्षता के विकास हेतु चिंतनशीलता में वृद्धि हो रही है जिसका मूल्यांकन विद्यार्थियों के प्रत्येक क्षेत्र में समायोजन के संदर्भ में किया जा सकता है। समायोजन प्रत्येक क्षेत्र के विकास की राह पर वृद्धि का एक हिस्सा है।

शोध समस्या का सीमांकन–

1 .शोध अध्ययन कार्य का क्षेत्र दुर्ग जिले के ग्रामीण एवं शहरी शासकीय विद्यालयों तक सीमित है।

2. शोध कार्य में 200 विद्यार्थियों 100 शहरी और 100 ग्रामीण को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है।

4. शोध अध्ययन में न्यादर्श के चयन हेतु सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

विश्लेषण व व्याख्या

H_{o1}. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

एस. पी. एस. एस. सॉफ्टवेयर की सहायता से तथा मध्यमान, मानक विचलन एवम् टी–परीक्षण द्वारा विश्लेषण निम्न रूप से है–

तालिका –1

समायोजन हेतु टी–परीक्षण तालिका

चर	कुल	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	पी– मूल्य
ग्रामीण	100	65.42	11.68	**0.363**	.05
शहरी	100	67.35	17.62		**सार्थक नहीं**

Df=198,p>.05

उपरोक्त तालिका द्वारा स्पष्ट है टी का मान 0.363 प्राप्त हुआ जो कि मानक मान 1.96 से कम है एवं .05 स्तर पर कोई सार्थक अंतर को नहीं दर्शाता है। **ग्रामीण** विद्यार्थियों का मध्यमान 65.42 एवं **शहरी** विद्यार्थियों के समायोजन का मध्यमान 67.35 पाया गया। अर्थात **शहरी** विद्यार्थियों का समायोजन **ग्रामीण** विद्यार्थियों के समायोजन की तुलना में **बेहतर** पाया गया है। अतः परिकल्पना "ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा" **स्वीकृत** होती है।

शैक्षिक उपादेयता

- विद्यार्थियों के शैक्षणिक, मानसिक ,पारिवारिक एवं सामाजिक विकास के लिए समायोजन के महत्व को ध्यान में रखते हुए शिक्षा में सुधार किया जा सकता है।

- विद्यार्थियों के समग्र विकास एवं समायोजन के लिए स्कूल एवं परिवार के बीच मजबूत सहयोग का महत्व स्थापित होता है।
- शिक्षकों एवं परामर्शदाताओं को विद्यार्थियों के सर्व समायोजन को समझने हेतु मदद मिलेगी, जिससे प्रत्येक स्थिति में बेहतर समायोजन के लिए उचित रणनीति बनाई जा सके।
- शिक्षा नीति को निर्मित करने वालों को लिंग के आधार पर विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को मध्य नजर रखते हुए नई दिशा निर्देश एवं नई नीतियां तैयार करने की दिशा में प्रेषित किया जा सकता है।

सुझाव –

- विद्यार्थियों का पारिवारिक वातावरण एवं उनकी प्रत्येक परिस्थितियों हेतु समायोजन के लिए सकारात्मक भूमिका का निर्वहन करते हुए माता–पिता को जागरूक किया जाए।
- माता–पिता के समर्थन हेतु विद्यार्थियों को आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक ,सभी परिस्थितियों को ध्यान रखते हुए समायोजित होने हेतु जागरूक किया जाए।
- विद्यार्थियों को लिंग के आधार पर शैक्षिक परिवेश, पारिवारिक परिवेश एवं सामाजिक परिवेश आदि में समायोजित होकर आगे बढ़ाने हेतु प्रोत्साहित किया जाए।

संदर्भ ग्रंथ –

1. गोयल, आर. (2019). सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्रों के समायोजन का अध्ययन। 'इंटरनेशनल जर्नल ऑफ अप्लाइड रिसर्च', 5(1), 60–63।
2. गुप्ता, एस. (2020). 'शिक्षा और समायोजन का मनोवैज्ञानिक अध्ययन'। जयपुररू साहित्य भवन प्रकाशन।
3. देवी, एस. (2023). माध्यमिक विद्यालय के आत्म सम्मान का शैक्षिक समायोजन के संबंध में एक अध्ययन। 'आई जे एफ एम आर', 5(3)

4. झा, डी. के. (2019). ग्रामीण और शहरी छात्रों के समायोजन स्तर एवं व्यक्तित्व गुण का तुलनात्मक अध्ययन। 'श्रृंखला एक शोध पत्र वैचारिक पत्रिका', 6(6)
5. कुमार, पी. (2020). उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, समायोजन क्षमता एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर के परिप्रेक्ष्य में शैक्षिक संप्राप्ति का अध्ययन। 'शोधगंगाध्इन्फ्लिबनेटध्वी. बी. एस. पूर्वांचल विश्वविद्यालयधशिक्षा विभाग'।
6. सिंह, एन. (2016). उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की आत्मसिद्धि एवं समायोजन का विश्लेषण। 'इंटरनेशनल जर्नल्स ऑफ रिसर्च इन ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस', 4(6)
7. सिंह, पी. के. (2019). 'समायोजन मनोविज्ञान में नवीनतम दृष्टिकोण'। पटनारू प्रकाशन संस्थान।
8. सिंह, एस. (2020). उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता एवं समायोजन का शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का अध्ययन। 'इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन मॉडर्न मैनेजमेंट अप्लाइड साइंस एंड सोशल साइंस', 2(1)
9. शर्मा, आर. (2018). 'व्यक्तित्व और समायोजन के सिद्धांत'। नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
10. शर्मा, आर. आर. (2001). संवेगात्मक परिपक्वता, समायोजन, पारिवारिक वातावरण तथा मानसिक स्वास्थ्य का किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन। 'शोधगंगा इन्फ्लिबनेट,छत्रपति साहू जी महाराज विश्वविद्यालयधशिक्षा विभाग'।
11. तिवारी, ए. (2021). 'समायोजन, सामाजिक और व्यक्तिगत परिप्रेक्ष्य'। लखनऊ, भारतीय शिक्षा प्रकाशन।